श्री चंद्रप्रभ विधान

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री चंद्रप्रभ विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्रीविद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना
संस्करण	:	तृतीय, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	30/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	१. बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना Mob.- 9425128817 २. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846 ३. अरिहंत जैन सागर, 8236060889
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥

अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ 1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ 2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ 3॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ 4॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ 5॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ 6॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ 7॥

हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥8॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥9॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(अवतार/लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।

ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥

जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री चन्द्रप्रभ विधान

जय बोलिये
चन्द्रपुरी के छोरे,
सकल परिग्रह छोड़े,
चैतन्य चन्द्रोदय के चाँद चकोरे,
प्रभु जी गोरे-गोरे,
चाँद सितारे जिन्हें देखकर शर्मायें,
जिनकी भक्ति को सब सिर झुकायें
ऐसे परमपूज्य
श्री चन्द्रप्रभ भगवान् की जय॥

भजन

(लय : चाँदी जैसा रूप है...)

चंदा जैसा रंग है तेरा, चंदा जैसा नाम।
चन्द्रपुरी के चंदा तुमको, बारम्बार प्रणाम॥

1.

महासेन के राज दुलारे, लक्ष्मीमति के लाल।
स्वर्गधाम से भू पर आये, हरते जग जंजाल॥
हमको निज की निधियाँ देकर, कर दो मालामाल।
पूज्य तुम्हीं हो भगवन् प्यारे, साँचे तीरथ धाम॥
चन्द्रपुरी के चंदा तुमको, बारम्बार प्रणाम॥

2.

तुमको यह दुनियाँ ना भायी, भायी मुक्ति नार।
उससे चले स्वयंवर रचने, चले मोक्ष के द्वार॥
एक तुम्हीं हो दूल्हे उसके, बाराती संसार।
हमको भी प्रभु शामिल करके, ले चलिए शिवधाम॥
चन्द्रपुरी के चंदा तुमको, बारम्बार प्रणाम॥

3.

जिसके दिल में तुम वसते वो, चले मोक्ष की ओर।
हृदय हमारे कब आओगे, प्यारे चाँद चकोर॥
तारण तरण जहाज तुम्हीं हो, थामो सबकी डोर।
अर्जी सुन के शुद्ध बना दो, अपनी आतमराम॥
चन्द्रपुरी के चंदा तुमको, बारम्बार प्रणाम॥

4.

तुम बिन कोई नहीं हमारा, ठुकराओ ना नाथ।
हम हैं भूले भटके स्वामी, रख लो अपने साथ॥
समाधिमरण को मुक्तिवरण को, सिर पर रख दो हाथ।
'सुव्रत' भी वो सब पा जायें, जो पाये जिन-राम॥
चन्द्रपुरी के चंदा तुमको, बारम्बार प्रणाम॥

श्री चन्द्रप्रभ विधान

स्थापना (दोहा)

चन्द्रप्रभु का नाम ही, हरे कष्ट सब पाप।
दर्शन पूजन से मिले, सब कुछ अपने आप॥

(ज्ञानोदय)

जो इस जग में स्वयं शुद्ध हैं, सबको शुद्ध बनाते हैं।
जिनके दर्शन भक्तजनों को, सुख की राह बताते हैं॥
ताराओं से घिरा चाँद भी, जिनके दर्शन को तरसे।
ऐसे चन्द्रप्रभु को हम तो, आज पूजकर हैं हरषे॥

नाथ! आपके जगह-जगह पर, चमत्कार हैं अतिशय हैं।
भक्त मुक्ति सुख शांति सम्पदा, पाते कर्मों पर जय हैं॥
यही प्रार्थना यही भावना, धर्मामृत बरसाओ-ना।
बिन माँगे सब कुछ मिल जाता, हृदय हमारे आओ-ना॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पुष्पांजलिं.....)

बचपन खोया खेल-खेल में, गयी जवानी भोगों में।
देख बुढ़ापा फक्-फक् रोते, जीवन गुजरा रोगों में॥
रागों से छुटकारा मिलता, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
जनम मरण आदिक दुख नशते, प्रासुक जल के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.....।

चारु चन्द्र की किरणें चंदन, हिमकण जल की शीतलता।
भव संताप मिटे न इनसे, मुरझाती है जीव लता॥
तन-मन भव-संताप दूर हो, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
देह सुगन्धित बने मनोहर, शुभ चन्दन के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं.....।

जग पद पैसा नाम प्रतिष्ठा, ये ही संकट विकट रहे।
रूप दिगम्बर किसे सुहाता, जीव इसी बिन भटक रहे॥
पद आपद हर्त्ता पद मिलता, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
सुख सम्पत्ती अक्षय मिलते, अखण्ड अक्षत अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

राम लखन सीता आदिक जो, ब्रह्मचर्य धर सुखी रहे।
ब्रह्मचर्य जो धर न सके वो, रावण जैसा दुखी रहे॥
इन्द्रिय जय कर प्रभु बन जाते, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
माला जैसे खिलके महको, दिव्य पुष्प के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।

जिनकी भूख नींद रूठी वे, महा दुखी इंसान रहे।
जिनकी भूख नींद मिटती वे, महा पूज्य भगवान् रहे॥
भूख नींद आदिक दुख नशते, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
स्वर्गों का साम्राज्य प्राप्त हो, ये नैवेद्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

यदि श्रद्धा विश्वास अटल हो, तो रत्नों के दीप जलें।
राहु-केतु शनि फिर भय खाते, सूर्य चाँद भी पूज चलें॥
मिले दीप यों मोह हरण को, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
काय-कांति भी अद्भुत बढ़ती, दीपक द्वारा अर्चन से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं.....।

धुआँ-धुआँ जब चले सूर्य तो, ताप रोशनी मिले नहीं।
धुआँ-धुआँ जीवन जलता तो, कर्मों का वन जले नहीं॥
अष्ट कर्म का भव-वन जलता, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
फिर सौभाग्य सूर्य भी चमके, धूप सुगंधी अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

भोग भोगकर धधक रहे हम, भोग हमें ही भोग रहे।
दुनियाँ के फल-फूल विषैले, गजब कर्म संयोग रहे॥

जहर भोग विषयों के नशते, चन्द्रप्रभु की पूजन से।
मनोकामना पूरी होती, प्रासुक फल के अर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आये हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाये हम॥
अष्टम् वसुधा मिलती, अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

कृष्ण पंचमी चैत्र को, वैजयन्त सुर छोड़।
लक्ष्मणा माँ के गर्भ में, आये चन्द्र चकोर॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णपंचम्यां गर्भमङ्गलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ग्यारस कृष्णा पौष में, जन्मे चन्द्र जिनेश।
महासेन के चन्द्रपुर, उत्सव किये सुरेश॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां जन्ममङ्गलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ग्यारस कृष्णा पौष में, तजे मोह संसार।
मुनि बनकर तप से सजे, जय-जय बारंबार॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां तपोमङ्गलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सातें फाल्गुन कृष्ण में, बने केवली नाथ।
चन्द्रपुरी के चन्द्र को, झुकें सभी के माथ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां केवलज्ञानमङ्गलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सम्मेदाचल से गये, मोक्ष महल के धाम।
सातें फाल्गुन शुक्ल में, सुर नर करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लसप्तम्यां मोक्षमङ्गलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जयमाला

(दोहा)

चन्द्रप्रभु भगवान् के, गुण-गण जग विख्यात।
जयमाला के नाम हम, कहते अपनी बात॥

(ज्ञानोदय)

महासेन नृप लक्ष्मणा के, राज कुँवर चंदा स्वामी।
चन्द्रपुरी के चन्द्र चकोरे, चित्त चोर अंतरयामी॥
चाँदी-चाँदी सबकी करते, चाँदी जैसे चमक रहे।
तभी भक्त चाँदी सोना ले, चन्द्र चरण में चहक रहे॥ 1॥

चारु चन्द्र की चमक चाँदनी, चंदन उनको रुचते क्या?।
जिनने दर्शन किये आपके, सूर्य चाँद वे भजते क्या?॥
चकनाचूर हुयी चंचलता, चन्द्रप्रभु की चर्चा से।
चूर-चूर अभिमान हुआ फिर, नाथ! आपकी अर्चा से॥ 2॥

अर्चा करना भूल गये हम, फँसकर दुनियाँदारी में।
तभी हमारी किस्मत फूटी, यारी रिश्तेदारी में॥
हमने जिसको सगा समझ के, अपना सब कुछ सौंपा है।
दगाबाज बन उस प्राणी ने, छुरा पीठ में घौंपा है॥ 3॥

समझ हितैषी जिस मानव को, भगवन् जैसा पूजा है।
मतलब निकला तो उसका मुँह, हमें देखकर सूजा है॥
जिन्हें बात करना सिखलाये, वही हमें फटकार रहे।
जिन्हें पिलाया अमृत हमने, वही जहर दे मार रहे॥ 4॥

फूल माल जिनको पहनायी, बने गले का वे फंदा।
जिनको रत्नों सा चमकाये, वे हमको कहते गंदा॥
नाथ! बात हम कहें कहाँ तक, अपनी करुण कहानी की।
हुआ हमारा जीवन ऐसा, ओस बूँद ज्यों पानी की॥ 5॥

ये नशने से बच जाता है, नाम आपका सुनकर के।
फिर भी चन्दा ग्रह में बाँधे, लोग सोम दिन चुनकर के॥
समंतभद्र की सुनकर भक्ति, हुए प्रकट तो शोर हुआ।
जैनधर्म का बिगुल बजा तो, अतिशय चारों ओर हुआ॥ 6॥

ऐसा अतिशय अब दिखला दो, विघ्न कष्ट दुख नाश करो।
दुनियाँ मोक्ष महल बन जाये, सबके दिल तुम वास करो॥
व्यसन बुराई पाप मिटें सब, दया अहिंसा महक उठें।
'सुव्रत' अपना धर्म समझ के, चंदा जैसे चमक उठें॥ 7॥

(दोहा)

छंद शब्द का ज्ञान ना, फिर भी भक्ति अथाह।
चन्द्रप्रभु को पूज हम, चलें मुक्ति की राह॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं.....।

चन्द्रप्रभु स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, चन्द्रप्रभु जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(ज्ञानोदय) (कषाय-मद)

जब औरों पर जोर चले ना, तभी क्रोध हम कर बैठे।
गैर जले या नहीं जले पर, आप स्वयं हम जल बैठे॥
क्रोध आग को क्षमा नीर दो, क्रूर क्रोध परिणाम हरो।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो॥ 1॥

ॐ ह्रीं परस्परक्रोध वैरविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

गुणियों का सम्मान न करना, यही मान का लक्षण है।
वंश कंश रावण कौरव के, मिटे इसी से तत्क्षण हैं॥

मान विजय को विनय सिखाओ,अक्कड़पन अभिमान हरो।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो॥ 2॥

ॐ ह्रीं मानसिकरोग मानविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

वेद पुराणों शास्त्रों के यदि, ज्ञानी बनकर कुपथ चले।
पढ़े लिखे वे मूरख जैसे, करें ज्ञानमद फूल चले॥
भले रहें अज्ञानी लेकिन, हमें भक्ति का दान करो।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो॥ 3॥

ॐ ह्रीं बुद्धिविकार ज्ञानमदविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अपनी जय-जयकार प्रशंसा, मान प्रतिष्ठा पूजाएँ।
सुनकर फूले भरे जोश से, पूजा मद वो कहलाएँ॥
पूजा मद को जीत सकें हम, अपयश मद अपमान हरो।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो॥ 4॥

ॐ ह्रीं अपयश पूजामदविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

वंश पिता दादा का वैभव, बढ़ा चढ़ा जो कुल पाना।
सुना-सुनाकर उसकी बातें, अहंकार से भर जाना॥
यही जीतने कुल-मद हमको, जिन-कुल का वरदान करो।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो॥ 5॥

ॐ ह्रीं क्लेशदायक कुलमदविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

नाना, मामा, माँ का कुल जो, उच्च जाति को पा फूले।
मोक्षमार्ग में नहीं लगा के, दर्प भरे मद में झूले॥
यही जाति मद जीत सकें हम, ऐसा सम्यग्ज्ञान भरो।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो॥ 6॥

ॐ ह्रीं भेदभावजनक जातिमदविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

शौर्य पराक्रम ऐसा जिससे, कर्म शैल भी हर सकते।
पर उससे आतंक किया तो, नरक सैर भी कर सकते॥
नश्वर ऐसा बल-मद तजने, आत्मशक्ति का दान करो।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो॥ 7॥

ॐ ह्रीं शक्तिहारक बलमदविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कठिन साधना तूफानी कर, ऋद्धि प्राप्त कर मद करना।
तंत्र मंत्र जादू टोना कर, पाखंडी शिवपथ करना॥
यही ऋद्धिमद त्याग सकें हम, मोक्षमार्ग का दान करो।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो॥ 8॥

ॐ ह्रीं कुमंत्रप्रभावहारक ऋद्धिमदविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

घोर तपस्या भाँति-भाँति की, करके खुद को बड़े कहें।
मुझ जैसा है कौन तपस्वी, तन शोषण कर खड़े रहें॥
पतन द्वार ये तप मद हरने, हमरा भी कुछ ध्यान धरो।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो॥ 9॥

ॐ ह्रीं पतनद्वार तपमदविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अतिशय सुन्दर कामदेव सा, तन पाकर अभिमान करें।
हँसी उड़ाएँ कुरूप जन की, खुद को श्रेष्ठ महान कहें॥
यही रूप मद त्याग सकें यों, दान भेद विज्ञान करो।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो॥ 10॥

ॐ ह्रीं भेदविज्ञानहारक रूपमदविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कपट करें विश्वास त्याग कर, कथनी करनी एक नहीं।
तन के उजले मन के काले, बगुला भक्ति नेक नहीं॥
मुँह में राम बगल में छुर्री, जग माया के काम हरो।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो॥ 11॥

ॐ ह्रीं कलंक मायाविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

तज संतोष लोभ लालच में, जीवन कितने गवाँ दिये।
लोभ पाप का बाप रहा ये, गुरु की वाणी भुला दिये॥
तृष्णा तृप्त हुई ना अपनी, संतोषामृत दान करो।
हे चन्द्रप्रभु! अपने जैसे, हमको भी गुणवान करो॥ 12॥

ॐ ह्रीं शान्तिहारक लोभविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(12 अविरित त्याग)

पृथ्वीकायिक जीवों को हम, रोज रात-दिन सता रहे।
सोना चाँदी हीरा पत्थर, इनसे खुद को सजा रहे॥
इनको हमसे कष्ट न हों यों, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी भवसागर से पार करो॥ 13॥

ॐ ह्रीं पृथ्वीसम्बन्धीदुःखविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ओस बर्फ जल-ओला कुहरा, इन्हें मारकर हम जीते।
जल जीवन है ऐसा कहके, इन्हें कष्ट दे जल पीते॥
इनको हमसे कष्ट न हों यों, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी भवसागर से पार करो॥ 14॥

ॐ ह्रीं जलसम्बन्धीसमस्याविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

दीप ज्योति ज्वाला अंगारे, आग-अग्निकायिक हैं जो।
स्वार्थ सिद्धि को इन्हें मारते, निर्बल दीन हीन हैं वो॥
इनको हमसे कष्ट न हों यों, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी भवसागर से पार करो॥ 15॥

ॐ ह्रीं अग्निसम्बन्धीसमस्याविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पवन हवा कूलर पंखे से, मरें वायुकायिक सारे।
श्वासों को लेने वाले सब, इन पर चला रहे आरे॥
इनको हमसे कष्ट न हों यों, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी भवसागर से पार करो॥ 16॥

ॐ ह्रीं वायुसम्बन्धीसमस्याविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पेड़ लता फल पत्ते पौधे, यही वनस्पतिकायिक हैं।
अपने-सुख आसक्त इन्हीं के, बेदर्दी से मारक हैं॥
इनको हमसे कष्ट न हों यों, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी भवसागर से पार करो॥ 17॥

ॐ ह्रीं वनस्पतिसम्बन्धीसमस्याविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो होते दो-तीन-चार या, पंचेन्द्री को त्रस कहते।
गैरों की खातिर ये प्राणी, पग-पग पल-पल दुख सहते॥
इनको हमसे कष्ट न हों यों, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी भवसागर से पार करो॥ 18॥

ॐ ह्रीं प्राणिमात्रसम्बन्धीसमस्याविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

एक परस इन्द्री में फँसकर, हाथी प्राण गँवाते हैं।
यश सम्मान इसी से घटते, जय करके सुख पाते हैं॥
आठ तरह परसन जीतें यों, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी भवसागर से पार करो॥ 19॥

ॐ ह्रीं स्पर्शन दोषविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पाँच तरह के भोजन के रस, सरगम के रस चखे सदा।
लाज नशाये युद्ध कराये, मछली इसमें फँसे सदा॥
ऐसी रसना विजय करें यों, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी भवसागर से पार करो॥ 20॥

ॐ ह्रीं रसना दोषविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो दुर्गंध सुगंध को सूँघे, वही घ्राण इन्द्रिय होती।
इसमें जो आसक्त हुये तो, भौंरे जैसी गति होती॥
ऐसी इन्द्रिय घ्राण विजय को, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी भवसागर से पार करो॥ 21॥

ॐ ह्रीं नासिकादोषविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

नीला पीला श्याम श्वेत या, लाल रंग जो बतलाती।
मरे पतंगा जिससे वो ही, चक्षु इन्द्री कहलाती॥
ऐसी इन्द्री चक्षु जय को, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी भवसागर से पार करो॥ 22॥

ॐ ह्रीं दृष्टिदोषविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सा रे गा मा पा धा नी जो, सुने सात सुन कान वही।
साँप हिरण इसमें फँस मरते, आत्म गीत का ज्ञान नहीं॥

ऐसी इन्द्री श्रोत्र विजय को, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी भवसागर से पार करो॥ 23॥

ॐ ह्रीं श्रुतदोषविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सीधी सादी सभी इन्द्रियाँ, टेढ़े-मेढ़े मन-दादा।
राग-द्वेष कर जग भटकाते, करते दुखी बहुत ज्यादा॥
करें नपुंसक मन पर जय यों, संयम दे उद्धार करो।
हे चन्द्रप्रभु! नाव हमारी भवसागर से पार करो॥ 24॥

ॐ ह्रीं समस्तहृदयरोगविनाशनसमर्थ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य

नाथ! आप सब कुछ जानो पर, तुम्हें कोई न जान सके।
सबके रक्षक पालन कर्त्ता, तुम्हें कौन पहचान सके॥
फिर भी उत्तम वे बनते जो, शीश झुका सम्मान करें।
पूज्य गुणों के गौरव बनते, जो तेरा गुणगान करें॥

(दोहा)

चन्द्रपुरी के चन्द्र को, सविनय टेकें शीश।
अर्घ्य समर्पण हम करें, मिले शांति आशीष॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

अंध-बंधमय लोक को, दिये दृष्टि जिनराज।
ऐसे चन्द्र जिनेश जी, करिये दिल पर राज॥

(ज्ञानोदय)

अष्टम तीर्थंकर जो जग में, चन्द्रप्रभु भगवान् रहे।
अष्ट कर्म को हरने वाले, भक्तों की वे शान रहे॥
अतिशयकारी अतिशयधारी, उनकी महिमा हम गायें।
स्वर्ग सुखों में क्या रक्खा है, मोक्ष धर्म हम अपनाएँ॥ 1॥

पहले भव में श्रीवर्मा जो, चार स्वप्न दे जन्म लिए।
जो जिनवर से तत्त्व ज्ञान ले, दीक्षा ले भव धन्य किए॥

फिर संन्यास मरण अपना के, पहले स्वर्ग सुरेश हुए।
स्वर्ग त्याग फिर आठ स्वप्न दे, अजितसेन चक्रेश हुए॥ 2॥

फिर चक्री तप धार मरणकर, सोलहवे सुर रूप हुए।
सपना दे फिर स्वर्ग त्यागकर, पद्मनाभ सुत भूप हुए॥
पद्मनाथ वैराग्य धारकर, चउ आराधन संग लिये।
सोलहकारण भाय भावना, तीर्थंकर पद बंध किये॥ 3॥

अन्त समय कर मरण समाधी, वैजयन्त सुर इन्द्र हुए।
फिर सोलह सपने देकर के, चन्द्रपुरी के चन्द्र हुए॥
शुक्ल वर्ण में शुक्ल भाव में, बनकर राजा राज्य किया।
सब कुछ नश्वर जान समझ के, मोक्षमार्ग वैराग्य लिया॥ 4॥

घाति कर्म हर हुए केवली, अष्टकर्म हर सिद्ध बने।
ताराओं के बीच चाँद ज्यों, ऐसे जगत् प्रसिद्ध बने॥
नाथ! आप ने सात-सात भव, कठिन तपस्या धारण की।
तब जाके सब कर्म नाश कर, मोक्ष सम्पदा वारण की॥ 5॥

हमें तपस्या से डर लगता, मोक्षमार्ग ना धर्म रुचे।
फिर कैसे भव तीर मिलेगा, कैसे जग में लाज बचे॥
भाग्य हमारा बिगड़ न जावे, ऐसी ज्योति जला दीजे।
सागर की लहरों जैसे ही, हमको भी अपना लीजे॥ 6॥

सब पर तुम करुणा बरसाते, हम पर भी बरसाओ ना।
सूर्य चाँद जो कर न सकें वो, ज्ञान प्रकाश दिलाओ ना॥
चाँद राहु से होता दागी, किन्तु आप बे-दाग रहे।
'सुव्रत' की अब अर्जी सुन लो, जो शिव सुख को माँग रहे॥ 7॥

(दोहा)

सार्थक चन्दा नाम है, हमको करो निहाल।
सादर हम सब गा रहे, चरणों की जयमाल॥

स्वार्थ रहित है प्रार्थना, आश रहित गुणगान।
मनोकामना पूर्ण हो, मिले यही वरदान॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय समुच्चयजयमालापूर्णार्घ्यं.....।

चन्द्रप्रभ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, चन्द्रप्रभ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

॥ इति श्री चन्द्रप्रभविधान सम्पूर्णम्॥

प्रशस्ति

नगर 'बिलहरा' में हुआ, पावन पावस पर्व।
जहाँ मूलनायक रहे, चन्द्रप्रभु पद-सर्व॥
चन्द्रप्रभु की छाँव में, चन्द्रप्रभु विधान।
'विद्यागुरु' पद ध्यान कर, पद्मसिन्धु सम्मान॥
दो हजार सन् दस रहा, शरद पूर्णिमा योग।
'मुनिसुव्रत सागर' रचे, भूल तजें भवि लोग॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(तर्ज : करें भगत् हो आरती.....)

चन्द्रप्रभु की आरती करो झूम-झूम के[2]
झूम-झूम के.....[4]
महासेन माँ - लक्ष्मणा के सुत न्यारे,
चन्द्रपुरी के लाल चन्द्रमा से प्यारे।
सबके नाथ तुम्हें हम पूजें झूम-झूम के[2]
चन्द्रप्रभु की आरती.....॥

ललितकूट सम्मेदशिखर खड्गासन से,
मोक्ष पधारे अष्ट कर्म के नाशन से।
शरणा दे दो नाथ आए हम घूम-घूम के[2]
चन्द्रप्रभु की आरती....॥

आप जगत् में साँचे हो हीरे मोती,
सूर्य चाँद से तेज आपकी है ज्योति।
नाम सुनत ही भक्त नाचते झूम-झूम के[2]
चन्द्रप्रभु की आरती....॥

जगह-जगह पर अतिशय खूब तुम्हारा है,
समंतभद्र को चमत्कार कर तारा है।
भूत पिशाच भगे चंदा नाम सुन-सुन के[2]
चन्द्रप्रभु की आरती....॥

नाथ! आपकी कृपा दशहरा दीवाली,
चरण धूल सब दुख संकट हरने वाली।
'सुव्रत' पा वरदान रहें हम झूम-झूम के[2]
चन्द्रप्रभु की आरती....॥